it may ultimately affect the production of steel in Bhilai steel plant as the stock in the plant would diminish by then.

The strike by the transport contractors has already affected a number of workers who are engaged in mines for digging iron ores. Besides this prolonged strike may ultimately result in a national loss and seriously jeopardise the national economy to a great extent.

The Steel Ministry should immediately intervene in the matter to bring an end to the strike by the transporters who are engaged in Dallirajhara mines for transporting iron ore.

(vi) REPORTED DAMAGE TO FOODGRAINS DURING TRANSPORTATION DUE TO NEGLIGENCE OF FOOD CORPORATION OF INDIA

श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा (कोडरमा): उपाध्यक्ष महोदय, बिहार प्रदेश विगत वर्ष से सूखा एवं अकाल से ग्रसित है। जहां लाखों लोगों को दो-जून भर पेट खाना नहीं मिल रहा है। लाखों लोग भारत में दाने-दाने के लिए तरसते हैं। प्रशासनिक लापरवाही के कारण अन्न का एक दाना भी नष्ट होना अक्षम्य अपराध गिना जाना चाहिये।

भारतीय खाद्य निगम के अधिकारी भी इतने लापरवाह और कर्त्तव्यहीन हैं कि पंजाब से एक हजार टन गेहूं, जिस का मूल्य 12.50 लाख रुपये है, रेलवे के वैगनों में खुले ट्रेन में लाद कर रांची के लिये भेजा। वर्षा का समय, यदि बन्द वैगनों का अभाव था तो खुले वैगनों में गेहूं कतई नहीं भेजना चाहिये।

दैनिक "रांची एक्सप्रेस" के 8 जुलाई के अंक में प्रथम पृष्ठ पर फोटो भी छपा है, जहां की स्थिति देखने से स्पष्ट हो जाता है कि एफ. सी. आई. के अधिकारी साढ़े बारह लाख के मूल्य के गेहूं को सड़ाने एवं बर्बाद करने के दोषी हैं। इसकी जांच शीघ्र की जाये और दोषी अधिकारियों पर कठोर कार्यवाही की जाये।

(vii) REPORTED STRIKES AND LOCKOUTS IN SEVERAL INDUSTRIAL UNITS IN BOMBAY

SHRI K. P. SINGH DEO (Dhenkanal): Sir, I may be permitted to raise the following matter of urgent public importance under Rule 377:

Seventy-nine industrial units in Bombay, Thana-Belapur Industrial Complex area, some of which were engaged in producing consumer goods components for electrical generation, transmission and distribution equipments and certain vital components for Defence purposes, have been on strike and lockout since the last nine months.

This has affected 35,000 workers, involving a loss of industrial production to the tune of Rs. 1 1/2 crores a day and Rs. 40 lakhs per day loss to the Exchequer by way of Central Excise and other duties.

This has also affected the Defence preparedness of the country, the functioning of the State Electricity Boards and the Exports Promotion and Import substitution effort.

Government in the Labour Ministry must take initiative to resolve this crisis since the Prime Minister herself at the State Labour Ministers' Conference held at Delhi on July 18, 19, 20, 1980 has expressed grave concern in the present economy and the need to raise production of goods for consumer and defence requirements.

(viii) REPORTED DEATHS DUE TO DRINKING OF SPURIOUS LIQUOR IN DELHI ON 19-7-1980

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार): उपाध्यक्ष महोदय, देश में अवैध रूप से शराब का निर्माण बराबर बढ़ता जा रहा है और निर्माण करने वालों की पुलिस के साथ सांठ-गांठ होने के कारण उसपर कोई रोक-टोक नहीं है। इसी का परिणाम है कि दिल्ली में

19 जुलाई, 1980 को यमुनापार न्यू सीलमपुर बस्ती में भोज में जहरीली शराब का वितरण किया गया। शराब में सम्भवत: कुछ गोलियां भी मिलाई गई थीं। उसके कारण पांच व्यक्ति मर चुके हैं और अन्य अनेक मौत से जूझ रहे हैं। कई अन्धे हो चुके हैं। सरकार द्वारा इनके परिवारों को किसी प्रकार की राहत आज तक नही पहुंचाई गई है। जहरीली शराब से मरने वाले सिर्फ गरीब होते हैं। यह दरअसल मौत नहीं, कत्ल है और इस कत्ल की हिस्सेदार पुलिस भी है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, we go to the next item.

श्री मनी राम बागड़ी : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पायंट आफ आर्डर है नियम 377 के अन्तर्गत---

MR. DEPUTY-SPEAKER: There will be no point of order in respect of 377. Nothing will go on record.

**(*Interruptions*)

DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL), 1980-81—*contd.*

MINISTRY OF HOME AFFAIRS—*Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, further discussion and voting on the Demands for Grants under the control of Ministry of Home Affairs. The Home Minister will reply.

गृह मंत्री (श्री जैल सिंह) : उपाध्यक्ष महोदय, कल और परसों, दो दिन, तकरीबन 14 घंटे तक इस सदन के सम्मानयोग्य सदस्यों ने होम एफेयर्ज की डिमांड्ज पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। मैं उन तमाम मेम्बरों का, जो पचास के करीब हैं, बड़ा मशकूर हूं। उन्होंने अपनी लियाकत और जजबात से फ्री और फ्रैंक राय दी है और सुझाव दिये हैं। बहुत से मेम्बर साहबान की बहुत महत्वपूर्ण कान्ट्रीब्यूशन है। उन्होंने ऐसे-ऐसे सुझाव दिये हैं, जो हमारे देश की अमन-कानून की व्यवस्था को और आपस के प्यार और मुहब्बत को बरकरार रखने में सहायक हो सकते हैं। मैं उनका धन्यवाद करते हुए आप के द्वारा यह भी कहना चाहूंगा कि मैं सब मेम्बरों के सवालों और उनके ख्यालों पर कोई टिप्पणी कर सकूं, यह शायद मुश्किल होगा। अगर इतने समय में मैं उन सब का जिक्र न कर सकूंगा, तो वे मुझे क्षमा करेंगे। मैं उम्मीद दिलाता हूं कि उनके ख्यालों को वैसे ही नहीं फेंक दिया जायेगा। मैंने दिमागी तौर पर भी और कागज पर भी उनके विचारों को नोट किया है और उनसे फायदा उठाया जायेगा।

जम्हूरियत में सबसे बड़ी बात—और भी बातें हैं, लेकिन एक बहुत बड़ी बात—यह होती है कि कंस्ट्रक्टिव क्रिटिसिज्म से बहुत सुधार होता है। इन्सान को हुकूमत का नशा सब नशों से ज्यादा होता है। आप ने देखा होगा कि जब हम हिन्दुस्तान की नशाबन्दी, शराबबन्दी करने लगे तो गांवों में हमारा सैशन हो रहा था, वहां किसी शायर ने आ कर कहा—

> हुस्नो जर व हुकूमत भी तो नशे हैं।
> फिर इस नशे में क्या खराबी है।
> वतन के रहनुमाओं मत उलझो इस में
> इंसान तो फितरतन शराबी है।

तो यह एक बहुत बड़ी बात है कि हुकूमत का नशा इंसान को ठीक रास्ते से भटका देता है और हुकूमत के कान बड़े हो जाते हैं, आंखें छोटी हो जाती हैं। मगर यह जो अपोजीशन है यह सहायता करती है। यह एंटी-डांट है। अहंकार भी नहीं होने देती और आंखें भी छोटी नहीं होने देती। मैं विश्वास रखता हूं कि आप को अपना दोस्त उतनी अच्छी शिक्षा नहीं दे सकता है जितना कोई विरोधी दे सकता है। विरोधी बेशक दोस्त भी हो मगर यह हमारा कायदा है कि उस तरफ बैठ कर इस तरफ वालों को कोई तारीफ करना पाप समझते हैं। जम्हूरियत में एक खराबी है, अपनी पार्टी के बुरे को भला कहना और दूसरी पार्टी के भले को बुरा कहना यह हमेशा रहा है मैं यह महसूस करता हूं कि संसार में सब से बुरी बात यह है कि इंसान अपने आप की तारीफ करे, मगर जम्हूरियत में यह सब से पहले करनी पड़ती है। न करो तो दूसरे तो राक्षस बना देते हैं देवताओं को।

**Not recorded.